Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 79-83

भारतीय संस्कृति : गांधीय दृष्टि

डॉ. गिरिजा जोशी

आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
बी.एन.डी. राजकीय कला महाविद्यालय, चिमनपुरा, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

संस्कृति के माध्यम से व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय विकास होता है। संस्कृति पहचान के अनुरूप निर्मित होती है। प्राचीनकाल से वर्तमान तक की भारतीय संस्कृति का मूल अधिष्ठान सबके हित तथा कल्याण की भावना के साथ आध्यात्मिक-मूल्य आधारित नैतिक विकास का रहा है। भारतीय संस्कृति वैज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर प्रमाणित हैं, जिसका मनोवैज्ञानिक प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर परिलक्षित होता है। गांधी का मानना है कि भारतीय संस्कृति की सहायता से आदर्श जीवन जीने की कला का कौशल मानव के जीवन को संपूर्णता प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति की प्रस्थापना से प्राचीन काल से अब तक अपने अस्तित्व को स्थायित्व प्रदान किया है। गांधी द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति के मूल गुणों जो कि परंपराओं, पौराणिक तथा लोकमान्यताओं के द्वारा विकसित हुए हैं इनको अपने सत्य के साथ मेरे प्रयोग में सम्मिलित करके संस्कृति के स्वरूप को जीवन के लक्ष्य के रूप में स्पष्ट किया है। भारतीय संस्कृति के गुणों को समाहित कर गांधी द्वारा अपना जीवन निर्वाह किया साथ ही गांधीवादी दृष्टि के अनुसार भारतीय संस्कृति को अधोलिखित रूप से शोध पत्र में स्पष्ट किया है जिसका विश्लेषण में एकादश व्रत (अहिंसा, अस्तेय, सत्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी तथा स्पर्श भावना) एवं जीवन लक्ष्य (सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह से युक्त, स्वदेशी को महत्त्व, अहिंसावादी, जीवन में विचार शुद्धि के साथ अस्तेय को अपनाना, नैतिक बंधनयुक्त आध्यात्मिक जीवन, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना) के अंतर्गत किया गया है।

संकेताक्षर—*सनातन संस्कृति, मूल्य, जीवन कौशल, एकादश व्रत, जीवन लक्ष्य*

प्रस्तावना

संस्कृति व्यक्ति-समाज-राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र की मूल्यात्मक पहचान है। संस्कृति शून्य व्यवहार समाज की मौलिकता से अलग अस्तित्व वाला होता है, जिसकी तुलना शरीर बिना आत्मा से की जा सकती है। प्राचीनकाल से अब तक की भारतीय संस्कृति में मूल्य एवं नैतिकता के गुणों का मूल्यांकन सम्मिलित है। इसी के समकक्ष पश्चिम की संस्कृति का अस्तित्व भौतिकतावादी है। इसी पहचान के आधार पर भारतीय सर्वहित प्रधान संस्कृति में जीवन निर्वाह करते हैं, जबकि पश्चिम स्वहित प्रधानता को अपना जीवन लक्ष्य मानते हैं। वर्तमान में भारतीय मानसिकता भी पूर्व-पश्चिम के द्वन्द्व में है, जिससे संक्रमण कालीन परिस्थितियाँ समक्ष हैं। लेकिन संतुष्टि का भाव अपनी प्राचीन संस्कृति के मूल गुणों को अपनाकर उसी के माध्यम से उन्नति एवं विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने से है।

संस्कृति का अंग्रेजी शब्द 'कल्चर' हैं, जिसे स्पेंगलर द्वारा प्रयुक्त किया गया। 1837 में बेकन एवं इमर्सन ने इसे नवीनीकृत कर मान्यता प्रदान की।[1] लावले के अनुसार "संस्कृति उन वस्तुओं के आनन्द से सम्बन्धित है, जिनको संसार सुंदर मानता है, यह उस ज्ञान की रुचि से संबंधित हैं, जिनको मानवता मूल्यवान समझती हैं, यह उन सिद्धान्तों का निरूपण करती हैं जिनको

समूह द्वारा सत्य मान लिया गया हो।"[2] चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के अनुसार "किसी भी जाति अथवा राष्ट्र के शिष्ट पुरुषों में विचार, वाणी और क्रिया का जो रूप व्याप्त रहता हैं, वही संस्कृति हैं।"[3] संस्कृति में मानव समाज के वे सब संस्कार जिनकी सहायता से लौकिक व पारलौकिक जीवन के मार्ग को प्राप्त किया जाता है, जीवन निर्माण में सहायक आचार-विचार, रहन सहन, वेशभूषा, बोली भाषा, कला, कौशल तथा चिंतन-मनन के संस्कारों की व्याख्या समाहित हैं। भारतीय संस्कृति के मूल अधिष्ठान का लक्ष्य व्यक्ति-समाज की आध्यात्मिक उन्नति का रहा है। यह एक स्वीकार योग्य तथ्य है कि आदर्श नागरिक के रूप में स्थापित व्यक्ति द्वारा देश काल की आवश्यकताओं के अनुरूप संस्कृति की पहचान का प्रतिबिम्ब समक्ष आता है। भारतीय संस्कृति मूल रूप से सभी के लिए सुख की कामना से प्रेरित है। यह विडम्बना ही है कि हमारी संस्कृति द्वारा स्थापित सामाजिक-पारिवारिक-वैयक्तिक मूल्यों को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय आधार पर प्राथमिकता दी गयी थी। जबकि भौतिकतावादी संस्कृति में यह श्रेणीकरण व्यक्तिगत से प्रारंभ होकर पारिवारिक-सामाजिक पर केन्द्रित होता है। इन दोनों श्रेणियों के विश्लेषण की सहायता से ही हम दोनों में विभिन्नताओं का अनुभव कर सकते हैं।

भारतीय समाज अपने नैतिक मूल्यों, परंपराओं, धर्म, कर्त्तव्य, आध्यात्मिकता तथा मानवता जैसी विशेषताओं से युक्त होकर ही पूर्णता को प्राप्त करता है। इन्हें हम नैसर्गिक रूप से प्राप्त करते हैं जिन्हें आगे बढ़ाना हमारा दायित्व होता है। मनोवैज्ञानिक रूप से यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति का विकास उसके मूल परिवेश, पहचान, मूल्यों तथा मान्यताओं को अपनाकर ही अपने नैतिक दायित्वों की पूर्ति में पूर्ण रूप से सहायक होता है। आध्यात्मिक संस्कृति के पक्षधर व्यक्ति तथा समाज इनको जीवन का अभिन्न अंग मानकर इसको व्यक्तित्व में समाहित कर लेते हैं जो कि हमारे व्यक्तित्व की मूल विशेषता है। विकसित औद्योगिकीकरण एवं आधुनिकीकरण के समय में भौतिकतावाद का प्रभाव प्रत्यक्ष अनुभव किया जा रहा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया के प्रारंभ से अब तक युवा पीढ़ी द्वारा इसे स्वीकार किया जा रहा है। संस्कृति में जब भी इस प्रकार की संक्रमणकालीन स्थिति समक्ष होती है, तब ही दोनों में तुलनात्मक विश्लेषण से निष्कर्ष निकाले जाते हैं। यह भी निर्विवाद रूप से सत्य ही है, कि मानव को नैसर्गिक रूप से मिली हुई पहचान से भावनात्मक-मनोवैज्ञानिक लगाव होता है। यही स्थिति हमारी भारतीय संस्कृति के साथ भी अनुभव किया जाता है। भौतिकवाद से प्रेरित संस्कृति से आत्मिक शांति का अनुभव नहीं होता है, इस हेतु मनुष्य अपनी संस्कृति से जुड़कर ही का अनुभव करता है। इस शांति-आध्यात्मिक सुख तथा संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण संस्कृति की मान्यताओं एवं वैज्ञानिकता का पश्चिमी जगत भी कायल है। इतिहास साक्षी है कि किसी भी देश का विकास उसकी संस्कृति की मान्यताओं पर निर्भर करता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति सम्पन्न जीवन से यह स्पष्ट है, इस समय की ज्ञान-विज्ञान, जीवन मूल्य, शिल्पकला, हस्तकला, तथा सबके कल्याण के लिए कार्य करने की प्रवृत्ति ने उन्हें सुखी और दीर्घायु बनाने में योगदान दिया। जिसका साक्षात् स्वरूप हमारे समक्ष है। मूल भारतीय संस्कृति के स्वरूप को धर्म उपदेशकों, चिंतकों तथा समाज सुधारकों द्वारा अपनाया गया। इसी श्रेणी में महात्मा गांधी द्वारा प्रदत्त संस्कृति के विचारों को गांधीवादी दृष्टि में संस्कृति के रूप में जाना जाता है। यह गांधी दृष्टि में सत्य, अहिंसा, आध्यात्मिकता की भावना एवं मानव चिंतन की विशेषताओं का उपयुक्त सम्मिलन हैं। गांधी भारतीय हिन्दू संस्कृति, परंपराओं तथा धार्मिक पौराणिक ग्रन्थों व लोकमान्यताओं से जुड़े हुए थे। हिन्दू धर्म के प्रति उनकी आस्था का प्रमाण जीवन के साथ तो प्रत्यक्ष रहा है लेकिन अंतिम समय में भी उनके मुख से हे राम ही निकला। महात्मा गांधी द्वारा दिये गये विचार, दर्शन, कार्य, बहुरंगी तथा बहु आयामी है, जिनका व्यापक प्रभाव भारतीय जनमानस में दृष्टिगत होता है। गांधी बाल्यकाल से ही धार्मिक प्रभाव एवं संस्कारयुक्त परिवार के अंग रहे। सनातन संस्कृति को इन्होंने अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' के दसवें अध्याय 'धर्म की झाँकी' में उनका धर्मपरायण व्यवहार स्पष्ट प्रमाण में समक्ष आता है। गांधी के विचारों में अहिंसक मूल भावना का विकास भी भारतीय संस्कृति के मूल जीवों के प्रति दया, करुणा, ममता के साथ आचार-विचार एवं आहार में शुद्धता तथा सात्विकता का बोध स्वमेव अन्तर्विष्ट है। विदेश प्रवास के समय उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन किया, इसमें निहित श्लोकों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। गीता को उन्होंने तत्वज्ञान का अमूल्य ग्रन्थ माना जो निराशा के समय में पथ प्रदर्शित करने वाला है। गांधी द्वारा भारतीय सनातन संस्कृति के मूल, स्तुति, उपासना, प्रार्थना, सर्वधर्म सम्भाव, यज्ञ, वेद, उपनिषद एवं स्मृतियाँ आदि का प्रयोग जीवन में करके उसके माध्यम से सभी के कल्याण का पथ प्रदर्शित करते हैं। गांधी में

हिन्दू धर्म-संस्कृति की प्रत्येक परम्परा और पद्धति से अनुराग तथा अपने धर्म को समझने की पारखी दृष्टि थी। प्राच्य भारतीय सनातन संस्कृति में यह मुख्य केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित रही हैं। हिंदू धर्म की गुरुपद की परम्परा तथा शाश्वत हिंदू धर्म के सिद्धान्तों, मूल्यों पर उनकी आस्था रही है।

गांधी के उद्धरणों, उनके जीवन प्रसंगों, जीवन शैली, मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता व हिन्दू धर्म दर्शन के प्रति गांधी जी की असीम आस्था, श्रद्धा, भक्ति व दृढ़ विश्वास के जो महान आदर्श और आत्मसातीकरण की दिशा में उनके द्वारा उठाये गये कदम हैं। गांधी के हिन्दू दर्शन से प्रारम्भिक परिचय के साथ ही वह भारतीय हिंदू धर्म-दर्शन-संस्कृति में ही राष्ट्र की उन्नति व मानव कल्याण के बीजमंत्र समाहित हैं।[4] गांधी द्वारा दिये गये संस्कृति के स्वरूप में "मनुष्य को समाज के सदस्य के रूप में किस प्रकार जीवनयापन करना है" इसी कौशल की व्याख्या की है। गांधी द्वारा संस्कृति संबंधी विश्लेषण में वर्तमान विद्यमान सभ्यता एवं संस्कृतियों में कमी की तरफ ध्यान आकृष्ट करना, तत्पश्चात् उन्होंने सच्ची संस्कृति की रूपरेखा को प्रस्तुत किया है।"[5] "मानव जीवन प्रणाली एकपक्षीय या एकांकी नहीं है। यह बहुमुखी और अनेक पक्षीय हैं, व्यक्ति एक साथ पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, कलात्मक नैतिक प्राणी हैं। इन विभिन्न क्षेत्रों में अनुकूलन करने के लिए जिन उपयुक्त प्रणालियों का विकास किया गया है। संस्कृति उनका संश्लिष्ट निकाय है। गांधी ने जीवन के विभिन्न पक्षों या क्षेत्रों की इन प्रणालियों पर विचार किया। इस प्रकार उन्होंने संस्कृति के नाम पर कोई परिभाषा तो प्रस्तुत नहीं की है किन्तु संस्कृति के विभिन्न पक्षों की व्याख्याएँ अवश्य प्रस्तुत की हैं।"[5] गांधी द्वारा नैतिकता, विवेक जन्यता से समीकृत संस्कृति के आदर्श स्वरूप की कल्पना की गयी, जिसकी मूल भावना में आध्यात्मिक अनुभूति परिलक्षित हो।

हिंद स्वराज में गांधी ने लिखा था कि संस्कृति में नैतिकता, विवेक तथा बुनियादी मूल्य अवश्य होने चाहिए। इनके अभाव में व्यक्ति का व्यवहार विक्षिप्त जैसा हो जाता है। भारतीय संस्कृति के गांधीवादी स्वरूप के अनुसार इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है। संस्कृति से अभिप्राय जीवन जीने के तरीके से हैं, गांधी द्वारा दिये गये एकादश व्रतों में संस्कृति निर्वहन के शुद्ध, आध्यात्मिक एवं नैतिक तरीके हैं। इनके प्रयोग व्यक्ति शुद्ध आचरण करेगा जो कि आदर्श समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

गांधी द्वारा दिये गये एकादश व्रत हैं—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, शरीर श्रम, अस्वाद,सर्वत्र भय वर्जन, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी, तथा स्पर्श भावना। इन एकादश व्रतों का विश्लेषण कर इन्हें जीवन में एकीकृत कर अपना लिया जाये तो निश्चित रूप से भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रत्यक्ष हो जायेगा। गांधीवादी संस्कृति की अपेक्षा आधुनिक संस्कृति के विरोध के साथ एक सशक्त आचरण निर्माण की सहायता से जीवन संचालन के निर्धारण की रही हैं।

गांधीवादी संस्कृति प्रयोग से जीवन संचालन हेतु निम्नलिखित लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है—

- गांधीवादी संस्कृति को स्वीकार्य करने वाला सत्य, अहिंसा तथा अपरिग्रह से युक्त होगा।
- अधिकारोक्ति को प्रयोग करने वाला होगा।
- अहिंसा का पालन करके भोगवादी प्रवृत्ति से बचा रहेगा।
- शुद्ध विचारों के साथ अस्तेय को अपनाने वाला हो।
- आध्यात्मिक जीवन हेतु नैतिक बंधन युक्तता को स्थान देने वाला होगा।
- स्वकेन्द्रण के स्थान पर वसुधैव कुटुम्बकम् की मूल भावना को अपनाने वाला होगा।

उपभोक्तावाद का प्रभाव मनुष्य की असीमित इच्छाओं पर दिखलाई दे रहा है, जिससे समाज में अनैतिकता, भावना शून्यता जैसी सामाजिक विषमताओं की वृद्धि हो रही है।

स्वहित प्रधानता के कारण व्यक्ति का ध्यान केवल अपने पर ही रह गया है, जिससे समाज में शोषण एवं दमन में वृद्धि हो रही हैं। गांधी मानव का ध्यान गरिमामयी लोककल्याण हेतु आकृष्ट करने पर बल देते थे। अहिंसा की उच्चतम अभिव्यक्ति से दोष रहित उन्नत समाज की कल्पना संभव है। गांधी मानते थे कि अहिंसा और उपयोगी संस्कृति के प्रयोग की सहायता से व्यक्ति एक भावना युक्त जीवन का निर्माण कर सकता है जिसका उद्देश्य सबके कल्याण से प्रेरित सर्वोदयी भावना वाला होगा।

गांधीवादी संस्कृति की विशेषताएं

गांधी का अपरिग्रह ही उनका अर्थशास्त्र है—गांधी चिंतन की मूल संकल्पना अर्थ की प्राप्ति तथा उसका आवश्यकता से अधिक संग्रह करना व्यक्ति की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। गांधी के अनुसार, "समस्त विश्व का आर्थिक आधार ऐसा होना चाहिए, जिससे कोई भी व्यक्ति अन्न तथा वस्त्र से विपन्न

नहीं प्रत्येक व्यक्ति को इतना काम मिले कि वह अपने दैनिक जीवन की न्यूनतम पूर्ति कर सके। यह तब ही संभव होगा जबकि जीवन से सम्बन्धित मूलभूत आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन जनता के नियंत्रण में हो। दैनिक वस्तुएँ उसी प्रकार उपलब्ध हो जैसे ईश्वर द्वारा प्रदत्त हवा और पानी। शोषण की अर्थव्यवस्था को तिलांजलि दी जाये। आर्थिक साधनों का आधिपत्य न किसी देश के हाथ में रहे, न राष्ट्र के हाथों में और न किसी व्यक्ति समूह में। इस साधारण सिद्धान्त की अवहेलना का अर्थ विनाशकारी हो सकता है।"[6] गांधी सत्य के शोध को मानव जीवन का आधार मानते हैं, वे आत्मा को प्राथमिकता देते थे, यद्यपि वे मानव शरीर की आवश्यकताओं के प्रति भी सजग थे, उन्होंने इन आवश्यकताओं का समाधान ढूंढने का प्रयास किया, किंतु ऐसा करते हुए उन्होंने मुख्य साध्य आत्मा का बलिदान नहीं किया। इसलिए उनके सभी आर्थिक सिद्धान्त उनके मूलभूत सिद्धान्तों सत्य और अहिंसा के साथ सुसंगत थे, आर्थिक समानता सबको रोजी तथा शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति का लक्ष्य अहिंसात्मक उपक्रमों द्वारा वैयक्तिक स्वाधीनता और श्रम की प्रतिष्ठा के साथ प्राप्त किया जा सकता है, हिंसा द्वारा नहीं।"[7]

सर्वोदयी अर्थशास्त्र उस भारतीय धारणा से अनुप्राणित है, जिसके अनुसार आर्थिक क्रियाकलापों, का केन्द्र व्यक्ति होता है, न कि धन। प्राचीन भारत में धन रूपये की उपयोगिता मानव व्यक्तित्व के पूर्ण विकास तक की जाती थी। अतः अर्थशास्त्र बिना किसी संदेश के नीति धर्म से संबंधित हैं।[8] गांधी ने इसके आधार पर यह स्पष्ट किया था कि मैं अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं मानता, यह अर्थशास्त्र जो व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण पर प्रहार करता है, अनैतिक हैं, इसलिए पापमय हैं।[9] गांधी का संपूर्ण ध्यान मानव के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास पर है—गांधी के आर्थिक व्यवस्था के मूल का मूल्यांकन स्पष्ट रूप से व्यक्ति के विकास के प्रभाव पर आधारित हैं।[10] सांस्कृतिक उन्नति नैतिक उन्नति की सहायता से होती हैं। नैतिकता, विवेक आधारित मूल्यों की प्राथमिकता से फलित संस्कृति के स्वरूप गांधी के अनुसार महत्वपूर्ण इसमें त्याग और संतोष निहित होता है। गांधी सादा-जीवन, उच्च विचार को महत्व प्रदान करते हैं। मूल्यों के व्यक्तित्व के आधार पर संस्कृति के लक्ष्य प्राप्त करने पर बल देते हैं।

गांधीवादी संस्कृति यंत्र की आवश्यकता को नहीं मानती हैं। मशीनों के प्रयोग के संदर्भ में कहते हैं कि "मशीनों के आविष्कार से पहले व्यक्ति अपने कपड़े स्वयं बुना करते थे। इसी प्रकार दैनिक उपयोग की सभी अन्य वस्तुओं का उत्पादन तत्वों में स्थानीय उपयोग के लिए किया जाता था। इसके फलस्वरूप सभी व्यक्ति कुछ कार्य एवं आमदनी के लिए आश्वस्त थे। जब मशीनें आयी तो उन्होंने सैंकड़ों व्यक्तियों को बेकार बना दिया, बेरोजगारी और व्यक्ति का केन्द्रीकरण इसका फल निकला।"[11] गांधी मशीन के विरोधी थे। गांधीजी मशीन का व्यक्ति के ऊपर महत्व समाप्त करना चाहते थे। अर्थात् वे नहीं चाहते थे कि व्यक्ति मशीन का दास बनकर रह जाये। गांधी द्वारा यंत्र का प्रयोग, मनुष्य की अपेक्षाओं, आकांक्षाओं आशाओं के आधार पर होगा तब ही वह गांधीवादी संस्कृति मूल्यों की प्रस्थापना कर सकेगा।

निष्कर्ष

निष्कर्षात्मक पक्ष को स्पष्ट करते हुए यह स्वीकार किया जा सकता है कि हिंद स्वराज में गांधी ने संस्कृति के बहुमूल्य स्वरूप का विश्लेषण करते हुए भारतीय संस्कृति को आदर्श संस्कृति के रूप में मान्यता दी है। भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण गुण संतोष की भावना से परिपूर्ण होना है। गांधी ने पश्चिमी संस्कृति के भौतिकवादी स्वरूप को भारतीय वातावरण और मानसिकता के प्रतिकूल माना है। परंपरागत प्राचीन भारतीय संस्कृति संतोषी सदा सुखी के मूल मंत्र को जीवन दर्शन मानती है, इसके पालन से अनुशासनात्मक जीवन जीने की राह सुगम होती है। जहां एक ओर जीवन में चिंतायें, अविश्वास, अपेक्षाएं, प्रतिस्पर्धाएँ तथा स्वार्थ ही वहां की संस्कृति का अस्तित्व कैसा होगा? क्या इसकी सहायता से हम गुणवत्तापूर्ण जीवन जीने के लिए मूल्य प्राप्त कर पायेंगे। मानवीय रूप से संस्कृति के अनेक पक्ष हैं—जिसमें कला, दर्शन, ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, अर्थशास्त्र एवं राजनीति हैं। सामाजिक रूप से इनकी उपस्थिति से जीवन में गुणवत्ता आती है, लेकिन स्वार्थ से वशीभूत मनुष्य ने इनका दुरुपयोग किया है, जिससे ज्ञान से अज्ञान, विज्ञान से विनाश, साहित्य और कला से असत्य, राजनीति से छल, अर्थ से शोषण तथा दर्शन द्वारा इन्द्रिय सुख को सर्वोपरि मानने से समाज में सांस्कृतिक विसंगति उत्पन्न हो रही हैं। अशांत मानव मन में अनेकों भय, अशांति तथा विनाशकारी प्रवृत्तियों का बाहुल्य हो रहा है। यह सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट के

कारण हमारे समक्ष हैं। सर्वोदयी गांधी संस्कृति में जीवन वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा पर ही विकसित होता है। हमारी प्राचीन धर्म प्रधान संस्कृति, सात्विक, आध्यात्मिक, मानवीय मूल्यों को प्रमुखता से स्वीकार करने वाली रही है।

इसी कारण गांधी इन्हीं मूल्यों पर आधारित संस्कृति को आत्मसात करने पर बल देते हैं, जिसका मूल उद्देश्य मानवीय मूल्यों से युक्त ऐसी प्रमाणित संस्कृति निर्माण से है, जिसमें विनाश, आक्रोश, प्रतिस्पर्धा, तथा शोषण का कोई स्थान नहीं हो। बल्कि वह 'जीओ और जीने दो' तथा सर्वोदय का प्रमुख आयाम, मैं मेरा ..... मैं स्वयं होऊंगा" को प्रतिबम्बित कर सृष्टि में मानव के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान प्रदान करके संस्कृति की महत्वपूर्ण उपलब्धि की प्रस्थापना व गांधी चिंतन की सहायता से मनुष्य को गुणवत्ता आदर्श जीवन की उच्चतम पराकाष्ठा प्रदान करने में सफल रहे।

संदर्भ सूची

1. सिंह, डॉ. रामजी, गांधी दर्शन में मीमांसा, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, दिसम्बर 1973, भाग 43, पृ.सं. 29
2. उपर्युक्त, पृ.सं. 118
3. टण्डन, डॉ. किरण, भारतीय संस्कृति, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, वेबसाइट एचटीटपीएसः// डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.एक्जोटिक इंडिया.आर्ट.कॉम
4. वर्क साइटेड 'महात्मा गांधी का हिन्दू दर्शन', डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.हिन्दीवेबदुनिया.कॉम
5. झा, राकेश कुमार, गांधीय चिंतन में सर्वोदय, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 1995, पृ.सं. 197
6. त्रिपाठी, शंभूरत्न, गांधी का सामाजिक धर्म, डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू.कानपुर ब्लागर्स ब्लॉगस्पोट.कॉम
7. गांधी, यंग इण्डिया
8. दीक्षित गोपीनाथ, गांधीजी की चुनौती कम्युनिज्म को, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1974
9. बसु, डॉ. एस.के., फाउण्डेशन ऑफ दी पालिटिकल फिलॉसफी ऑफ सर्वोदय, बिलिस एण्ड लाईट पब्लिशर्स, 1984, पृ.सं. 148
10. गांधी, मोहनदास कर्मचंद, आत्मकथा अथवा सत्य के साथ मेरे प्रयोग, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1963, पृ.सं. 220
11. बोस, एन.के., स्टॅडीज इन गांधीज्म, कलकत्ता, 1962 तीसरा संस्करण, पृ.सं. 221